रवीन्द्रनाथ मिश्र

# मध्यवर्गीय जीवन का सांस्कृतिक द्वंद्व : ए.बी.सी.डी. *

आज संयुक्त परिवार के विघटन एवं दूरियों के सिमटने के कारण खासतौर से मध्यवर्गीय परिवारों में सांस्कृतिक जीवन-मूल्यों को लेकर एक नए तरह का संकट उपस्थित हो गया है। इन मूल्यों पर मीडिया, बाजारवाद, सूचना प्रौद्योगिकी आदि का सीधा असर पड़ रहा है। युवा-युवतियों में मौजमस्ती और सैर-सपाटे की संस्कृति हावी होती जा रही है। उनको परिवार, समाज, राजनीति और धार्मिक मामलों में भी कोई दिलचस्पी नहीं है। फलस्वरूप वैचारिक रूप से परिवार और समाज में नई और पुरानी पीढ़ियां आपस में टकरा रही हैं। एक तरफ जहाँ पुरानी पीढ़ी अपने अतीत की परंपराओं और मूल्यों को गाँठ बाँधकर रखना चाहती है वहीं दूसरी तरफ नई पीढ़ी उसे खोलकर तितर-बितर करने में सन्नद्ध हैं।

रवींद्र कालिया ने अपने साहित्य में मूलत: आधुनिक जीवन संस्कृति के विविध तारों को बड़ी संजीदगी के साथ झनझनाया है। वर्ष 2004 में प्रकाशित उनके लघु उपन्यास "ए.बी.सी.डी." (अमेरिका बार्न कंफ्यूज्ड देसी) में एक ऐसे प्रवासी भारतीय परिवार की कहानी है जोकि मूलत: पंजाब का है लेकिन नौकरी के सिलसिले में कनाडा जाकर बस गया है। परिवार में हरदयाल, उनकी पत्नी शील तथा शीनी और नेहा नामक दो बेटियाँ हैं। विडंबना इस बात की है कि हरदयाल पत्नी के साथ कनाडा में रहकर भी पंजाब में जीते हैं और उनकी बेटियाँ पंजाब की होकर भी कनाडा में जीती हैं। बड़ी बेटी शीनी ने तो सरहदों को पार कर निक के साथ डेट पर जाना भी शुरू कर दिया है। कनाडा की खुली रोमांस संस्कृति उसके जीवन का अहम् हिस्सा बन गई है। पारिवारिक मर्यादाओं का ख्याल न करते हुए बेटी का इस प्रकार डेट पर जाना माँ-बाप के लिए जीवन-मरण का प्रश्न बन गया लेकिन करें भी तो तो क्या? वे दोनों समय के साथ परिस्थितियों से समझौता करते हुए अपने को बदलते हैं। इसे हम उनकी मजबूरी कह सकते हैं, वैचारिक परिवर्तन नहीं। दरअसल आज इस पीड़ा को प्रवासी भारतीय ही नहीं अपितु भारतीय भी भोग रहे हैं।

इधर निक का धीरे-धीरे शीनी के घर आना-जाना बढ़ता ही जाता है और वह अपने सद व्यवहार और आचरण से हरदयाल और शील के हृदय में स्थान बना लेता है। हरदयाल और उसकी पत्नी सीने पर पत्थर रखकर इस रिश्ते को स्वीकार करते हैं। रिश्ता होता है और बिल्लू और हैरी दो बच्चों के जन्म के बाद टूटता भी है। माँ-बाप अपने अलग-अलग मित्र भी ढूँढ़ लेते हैं। बच्चों के पालन-पोषण की जिम्मेदारी कानून के अनुसार माँ-बाप पर पंद्रह-पंद्रह दिनों की आती है। प्रेम और तलाक दोनों की पहल शीनी की तरफ से होती है।

लेखक ने उपन्यास के प्रारंभ में ही दो संस्कृतियों की टकराहट, भारतीय जमीनी सोच, बनते-बिगड़ते रिश्तों, अंग्रेजी मिश्रित तकनीकी शब्दावली आदि का संकेत दे दिया है।

कनाडा के हवा-पानी में पलने-बढ़ने के कारण शीनी वहाँ की संस्कृति में घुल-मिल कर पूर्ण रूपेण कनैडियन बन गई हैं। बात-बात पर भारत की संस्कृति और यहाँ की सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवस्था की खिल्ली उड़ाना उसकी आदत हो गई है। उसकी माँ शील अपनी बेटी के स्वछंद एवं भारत विरोधी विचारों से बहुत दु:खी रहती है। कभी-कभी क्रोध में आकर कहती है, "मैंने लड़कियाँ नहीं, सांपिनें पैदा की हैं।" शीनी जवाब देती है—"तुम्हें गर्व होना चाहिए कि तुम्हारी ये सांपिनें दोहरी जिंदगी नहीं जीतीं। जब मैं

* ए.बी.सी.डी., ले. रवींद्र कालिया, प्र. वाणी प्रकाशन, 21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-2, प्र.सं. 2004, डिमाई, पृ.सं. 97, मूल्य 125.00

हिंदुस्तानियों को यह कहते हुए सुनती हूँ कि 'अवर कंट्री इज वैरी-वैरी ग्रेट' तो मेरा बहुत मनोरंजन होता है। दलितों, अल्पसंख्यकों और अपनी बहुओं को जिंदा जलाने वाली कौम जब नैतिकता और अहिंसा का वास्ता देती है तो मेरी हँसी छूट जाती है।'' संवाद की अगली कड़ी में जब शील कहती है—''नारी का सबसे बड़ा आभूषण लज्जा है। शील है। कोमलता है। कन्याओं का तो कौमार्य भी है।'' इस पर शीनी भड़क कर कहती है, ''तुम लोगों की सारी नैतिकता चड्ढी तक सीमित है।'' (पृष्ठ 12-13) माँ-बेटी के इस संवाद में दो संस्कृतियों की टकराहट के साथ भारत की सामाजिक बुराई का भी खुलासा हुआ है।

शीनी के इन विचारों से माँ-बाप बहुत दु:खी हैं लेकिन उसकी छोटी बन नेहा भी इसी राह पर बढ़ रही है।

इधर भारत में आज भी नारी की पवित्रता को सबसे बड़ा धर्म और मूल्य माना जाता है जहाँ नारी अपनी बलि देकर भी सतीत्व की रक्षा करती है। अपनी पुत्री की स्वछंदता से दु:खी होकर शील कहती है, ''तुम्हारे जैसी संतान भगवान् किसी को न दे, जो अपने माँ-बाप की दुश्मन हो जाए। मैं तो अपने को कोसती रहती हूँ कि ऋषियों-मुनियों की पवित्र धरती छोड़कर यहाँ क्यों चली आई। पिछले जन्म में जरूर कोई पाप किया होगा, जिसका दंड भोग रही हूँ।'' (पृष्ठ 12) हरदयाल और उनकी पत्नी किसी भी कीमत पर निक के साथ शीनी की दोस्ती नहीं चाहते थे, क्योंकि उनके कई प्रवासी भारतीय मित्र कनाडा में रहकर भी अपनी संस्कृति को मजबूती से पकड़े हुए थे। शील ऐसे प्रवासी भारतीय परिवारों को पसंद करती थी और उन्हें हफ्ते में एक बार जरूर अपने घर में बुलाती थी। वह घर में ऐसा माहौल तैयार करना चाहती थी कि उसकी बेटियाँ गलत रास्ते पर न जाएँ। हरदयाल भी संत-महात्माओं द्वारा बताए गए रास्ते पर चलकर शीनी की मानसिकता को परिवर्तित करना चाहता था।

इस प्रकार भारतीय माता-पिता और उनकी पुत्रियों के माध्यम से दो भिन्न संस्कृतियों, जीवन-मूल्यों और विचारों की टकराहट को व्यक्त किया गया है। एक तरफ हरदयाल और उनकी पत्नी अपनी संस्कृति को गरीब के धन की तरह सीने से चिपकाए रहना चाहते हैं वहीं दूसरी तरफ उनकी बेटियाँ उसे उतार फेंकना चाहती हैं। इक्कीसवीं सदी के पहले दशक में कनाडा में ही नहीं, अपितु भारत में भी मुख्य रूप से मध्यवर्गीय परिवार के हर घर की यही कहानी बन गई है।

आधुनिकता के तमाम शोर-शराबों के वावजूद आज भी मध्यवर्गीय समाज की पुरानी पीढ़ी नई पीढ़ी के पाश्चात्य विचारों को तरजीह नहीं दे रही है। फलत: दोनों में संघर्ष जारी है। मीडिया द्वारा परिवार और समाज के खिलाफ युवा-युवतियों द्वारा किए गए अवैध प्रेम-संबंधों की करुण गाथाएँ रोज परोसी जा रही हैं। भूमंडलीकरण के इस दौर में तेजी से भारतीय और पाश्चात्य संस्कृतियों का संक्रमण हो रहा है। फलस्वरूप जमीनी सोच और मूल्यों को लेकर अनेक संकट पैदा हो रहे हैं। यह उपन्यास इसी यथार्थ को प्रस्तुत करता है।